''थाईदेश विलासम्'' एक समीक्षा

राजेश कुमार*

थाईदेश विलासम् खण्ड काव्य 120 श्लोक में रचित है। यह खण्डकाव्य दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष आचार्य सत्यव्रत शास्त्री द्वारा रचित है। यह खण्डकाव्य वैदेशिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया इसमें थाईलैण्ड की भौगोलिक, प्राकृतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक व्यवस्था का वर्णन प्रस्तुत है। इस खण्डकाव्य में कवि ने अपनी कवित्व प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए थाईलैण्ड की राजधानी बैंकाक का वैभवपूर्ण, ऐश्वर्यशाली, समृद्धशालितापूर्ण स्वरूप का वर्णन किया है। यह राजधानी अपने स्वरूप में विश्व के समस्त आगन्तुकों को अपनी संस्कृति एवं आचरणशीलता के आधार पर बहुत ही कमनीय एवं आकर्षणीय लगती है। जिसके स्वरूप का कवि ने अपने संस्कृत भाषा के भाव में अभिव्यक्त किया है। इसी संदर्भ में इस शोध पत्र में संक्षिप्त समीक्षा प्रस्तुत है।

भौगोलिक परिवेश

कवि बैंकाक में रहकर थाईलैंड के सम्पूर्ण विस्तृत भौगोलिक परिवेश का सूक्ष्मता से अध्ययन किया और उन अनुभवों को अपने मधुर पदों में आख्यान करने का अथक प्रयास किया है। थाईलैंड की भौगोलिक स्थिति को भी कवि ने अपने खण्डकाव्य में सुन्दर पदों में अभिव्यक्त किया है। थाईलैंड देश एशिया प्रायद्वीप का एक सुन्दर देश है जो दक्षिण एशिया में स्थित समुद्रतटीय भूभाग वाला है। इसके भौगोलिक परिवेश के विषय में कवि का पद्य दृष्टव्य है–

अस्त्येशियानामनि सुप्रसिद्धे, द्वीपे विशालेऽतिविशालकीर्तिः।

आग्नेय दिङ्मण्डलमौलिभूतो, देशो अतिरम्ययो भुवि थाईलैण्डः।।[1]

ऐतिहासिक तथ्यों का वर्णन –

कवि ने थाईलैंड के अस्तित्व के इतिहास का वर्णन भारत के पुराणों में वर्णित होने के प्राचीनता के साथ थाईलैंड के राजवंश के ऐतिहासिक वंशावली का इस खण्डकाव्य में क्रमबद्ध वर्णन करते हैं। कवि ने प्रस्तुत किया है कि इस थाईलैंड के इतिहास में इसमें शासन करने वाले 33 राजाओं का प्रशासनिक अधिकार एवं प्रजाहित के लिए तत्पर रहनेवाले विशाल कीर्ति वाले राजाओं का अस्तित्व रहा है।

वहाँ के प्राचीनतम राजवंश जो चक्रीय नामक था उसके विषय में अभिव्यक्त किया है।

चक्रीतिनामाऽद्यतनोस्ति योऽत्र, सद्राजवंशो भुवनेषु रूढ़ः।

संस्थापकस्तस्य विपश्चिदेतां, संस्थापयामास स राजधानीम्।।[2]

सांस्कृतिक सौमनस्य –

थाईलैंड एक सभ्य एवं आचरणशील संस्कृति का वाहक है क्योंकि वहां बुद्ध संस्कृति एवं लोक व्यवहार संनियमि एवं सर्वग्राह्य है। वहां की संस्कृति बौद्ध दर्शन के आधार पर जन मानस के द्वारा सर्वग्राह्य है। वहाँ पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव तो है लेकिन वे अपने देश की संस्कृति को महत्व देते हैं। वहाँ की संस्कृति ना अति प्राचीन है ना अत्यधिक आधुनिकता के विलासों से विकृत है बल्कि यह दोनों के मध्यम स्वरूप वाली है, जो विश्व में सम्मानीय है जैसा कि कवि ने अभिव्यक्त किया है–

पुराणमित्येव न साधुसर्वं, न चानवद्यं सकलं नवं च।

इत्यायशयेनैष गुणं कदाचित, प्रत्नं च नूत्नं च दधाति देशः।।[3]

प्राकृतिक सुषमा –

कवि ने थाईदेश विलासम् में थाईलैंड की प्राकृतिक सुन्दरता का बड़े मनोरम एवं माधुर्य पदों में वर्णन किया है। कवि ने वहाँ की शस्य श्यामलता धरती एवं मन्द मन्द बहती वायु जो शारीरिक एवं मानसिक सुख प्रदान करती है

थाईलैंड के प्राकृतिक सौन्दर्य का द्योतक है को सुन्दर मधुर भाव में अभिव्यक्त किया है। इसी कारण थाईलैंड में आये हुए विश्व के समस्त आगन्तुक उसकी प्राकृतिक सुन्दरता की रमणीयता के कारण ही आनन्दविभोर हो जाते हैं। जैसा कि कवि ने अभिव्यक्त किया है–

आकृष्टपच्यं बहु यत्र सस्यं, रम्यास्तथा शाद्वलभूमिभागाः।
मन्दं प्रवान्तश्च यदीयवाता, आगन्तुकानां रमयन्ति चेताः।।[4]

धार्मिक मान्यता –

थाईलैंड के समस्त जन जीवन की धार्मिक प्रवृत्ति है जो मंगल कामनाओं हेतु अपने ईष्ट देवता की आराधना करते हैं और अपने को भक्तिमय अवस्था में सदैव तत्पर रखते हैं। वहां के लोग करुणा के सागर मानवता के संदेष्टा महामानव महात्मा बुद्ध के आदर्श उपदेशों को आत्मा में सम्मान सहित धारण करते हैं और सच्चे मन से पालन करते हैं। महामानव महात्मा बुद्ध ने शांति एवं सदाचार का उपदेश दिया है क्योकि बौद्ध धर्म सदाचार का धर्म है उसी का प्रभाव है कि थाईलैंड देश शांति सहयोग प्रेम एवं सदभाव पर बल देता है। थाईलैंड में महात्मा बुद्ध का हर स्थान पर प्रार्थना स्थल स्थापित है। प्रत्येक प्रार्थना स्थलों में महात्मा बुद्ध के वचनो ंका उच्चारण निरन्तर होता रहता है जो उनकी बौद्ध धर्म की आस्था का प्रतीक है। जैसा कि कवि ने अभिव्यक्त किया है–

उच्चर्यमाणानि पदेपदेऽत्र, विहार भूमिष्वितरत्र चापि।
वमन्ति शाक्यस्य मुनेर्वचांसि, पीयूषधारां श्रुतिशष्कुलीषु।।[5]

कलागत सौन्दर्य –

बैंकाक की वैभवशालिता एवं रमणीयता का मुख्य कारण वहां की उत्कृष्ट कला सौष्ठव है जिसके कारण बैकाक विश्व की सुन्दर एवं ह्रदयाकर्षक नगरी के रूप में जानी जाती है। कवि ने इस खण्डकाव्य में उसकी स्थापत्य कला, मूर्ति कला, चित्रकला, संगीत कला एवं नृत्य कला का बड़ा मनोहारी चित्रण किया है। और इसका कारण है कि वहां के लोग अत्यधिक कला प्रेमी एवं सृजनाशक्ति से परिपूर्ण मानवीय व्यवहार रखते हैं। स्थापत्य कला का सुन्दर प्रयोग में कवि ने इस पद्य में व्यक्त किया है–

तद्वैभवं वीक्ष्य च तत्कलाया, नैपुण्यमालोक्य विमुग्धभावः।
दिवश्च्युतं खण्डमतीवं कान्तं, जनो विशालं परिशङ्कते यम्।।[6]

छन्द योजना –

कवि ने थाईदेश विलासम् खण्ड काव्य में 7 छंदों का प्रयोग किया है। आपने छंदो ंके प्रयोग में कवित्व प्रतिभा का परिचय दिया है। पूरा खण्डकाव्य समुचित छंदो ंके प्रयोगों से चमत्कृत हो गया है। इस खण्डकाव्य में उपजाति, अनुष्टुप, भुजंगप्रयातम्, वसन्ततिलका, द्रुतविलम्बितम्, आर्यावृत्तम, तथा विद्युन्माला छन्दों का प्रयोग किया गया है। जिसमें उपजाति छन्द का सुन्दर प्रयोग दृष्टव्य है–

अस्त्येशियानामनि सुप्रसिद्धे, द्वीपे विशालेऽतिविशालकीर्तिः।
आग्नेय दिङ्मण्डलमौलिभूतो, देशो अतिरम्ययो भुवि थाईलैण्डः।।[7]

भुंजगप्रयातम् छंद का सुन्दर प्रयोग भी द्रष्टव्य है–

अयोध्यापुरी नातिदूरे विभाप्ति, सुरम्यं स्थलं वाङ्–प–इन्–'नाम यत्र।
कथां कस्यचिद् भूपतेः कौतुकेन, मनोज्ञां जनाः सङ्गता उद्गिरन्ति।।[8]

रस योजना –

इस खण्डकाव्य में कवि ने मुख्य रूप से श्रृंगार रस को प्रमुख स्थान दिया है और थाईलैंड के उस सुन्दर स्वरूप को भी श्रृंगार रस की सुन्दर अनुभूति में वर्णित किया है। उस बैंकाक की सुन्दरता एवं भव्यता में विस्तार करने वाले अद्भुत रस को भी बड़े सुन्दर स्वरूप में प्रस्तुत किया है। इस खण्डकाव्य में वीर रस का भी कवि ने कहीं कहीं पर वीर पुरुषों की स्मृति में तथा उनके युद्ध कला की निपुणता में प्रयोग किया है। कहीं कहीं पर वीर योद्धाओं की युद्ध में वीर गति को प्राप्त करने की स्थिति में करुण रस का भी प्रयोग

किया है। श्रृंगार रस का सुन्दर प्रयोग में एक पद्य दृष्टव्य है–

स तां रत्रिमेतां स्वदारांश चकार, कणेहत्थ रेमे तयाय चापि सार्धम।

निवृत्तः सुखं च स्वकां राजधानीं, स्वकृत्येषु भूयो मनः स्वं बबन्ध।।[9]

अलंकार योजना –

थाईदेश विलासम् खण्डकाव्य में कवि ने अपने अलंकारों की प्रयोगों में कवित्व प्रतिभा का अत्यधिक परिचय नहीं दिया है फिर भी कवि ने कई अलंकारों का प्रयोग किया है। कवि ने इस खण्डकाव्य में अनुप्रास अलंकार, यमक अलंकार, रूपक अलंकार, उत्प्रेक्षा अलंकार, अतिशयोक्ति अलंकार, दृष्टान्त अलंकार, एवं निर्दशना अलंकार, व्यतिरेक अलंकार इत्यदि अन्य अलंकारों का भी प्रयोग किया है। उपमा अलंकार का सुन्दर प्रयोग दृष्टव्य है–

देशस्य तस्यास्ति भृशं विशाला, कण्ठेभ्रुवाः शुभ्रतरेव माला।

ऐश्वर्यसौन्दर्यविलासधानी, बैंकाकनाम्नी खलु राजधानी।।[10]

सन्दर्भ –

1. थाईदेश विलासम्, श्लोक 2
2. वही, श्लोक सं0 10
3. वही, श्लोक सं0 14
4. वही श्लोक 26
5. वही श्लोक सं0 28
6. वही श्लोक सं0 3
7. वही श्लोक सं0 65
8. वही श्लोक सं0 84
9. वही श्लोक सं0 80
10. वही श्लोक सं0 9